"मीठे बच्चे - जैसे बाप गाइड है, ऐसे गाइड बन सबको घर का रास्ता बताना है, अंधों की लाठी बनना है"

प्रश्नः- इस बने-बनाये अनादि ड्रामा का राज़ कौन सा है, जो तुम बच्चे ही जानते हो?

उत्तरः- यह बना बनाया अनादि ड्रामा है इसमें न तो कोई एक्टर एड हो सकता है, न कोई कम हो सकता है। मोक्ष किसी को भी मिलता नहीं। कोई कहे कि हम इस आवागमन के चक्र में आयें ही नहीं। बाबा कहते हाँ कुछ समय के लिए। लेकिन पार्ट से कोई बिल्कुल छूट नहीं सकते। यह ड्रामा का राज़ तुम बच्चे ही जानते हो।

चढ़ाओ नशा... ***How Lucky & Great we all are...!***

ओम् शान्ति। मीठे-मीठे बच्चे यह जानते हैं कि भोलानाथ किसको कहा जाता है। तुम संगमयुगी बच्चे ही जान सकते हो, कलियुगी मनुष्य रिंचक भी नहीं जानते। ज्ञान का सागर एक बाप है, वही सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त का ज्ञान समझाते हैं।

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

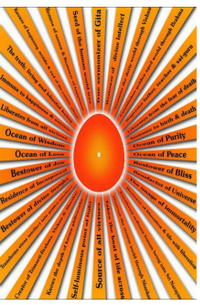

अपनी पहचान देते हैं। तुम बच्चे अभी समझते हो, आगे कुछ नहीं जानते थे। बाप कहते हैं मैं ही आकर भारत को स्वर्ग बनाता हूँ, बेहद का वर्सा देता हूँ। जो तुम अभी ले रहे हो। जानते हैं हम बेहद के बाप से बेहद सुख का वर्सा ले रहे हैं। यह

बना बनाया ड्रामा है, एक भी एक्टर न एड हो सकता, न कम हो सकता है। सभी को अपना-अपना पार्ट मिला हुआ है। मोक्ष को पा नहीं सकते। जो-जो जिस धर्म का है फिर उस धर्म में जाने वाले हैं। बौद्धी वा क्रिश्चियन आदि इच्छा करें हम स्वर्ग में जायें, परन्तु जा नहीं सकते। जब उनका धर्म स्थापक आता है तब ही उनका पार्ट है। यह तुम बच्चों की बुद्धि में है। सारी दुनिया के मनुष्य मात्र इस समय नास्तिक हैं अर्थात् बेहद के बाप को न जानने वाले हैं। मनुष्य ही जानेंगे ना। यह नाटकशाला मनुष्यों की है। हर एक आत्मा निर्वाणधाम से आती है पार्ट बजाने। फिर पुरुषार्थ करती है निर्वाणधाम में जाने के लिए। कहते हैं बुद्ध निर्वाण गया। अब बुद्ध का शरीर तो नहीं गया, आत्मा गई। परन्तु बाप समझाते हैं, जाता कोई भी

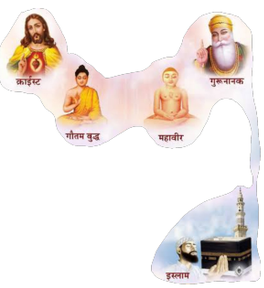

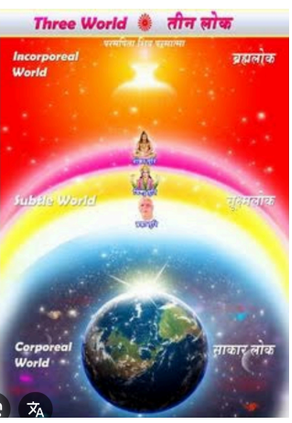

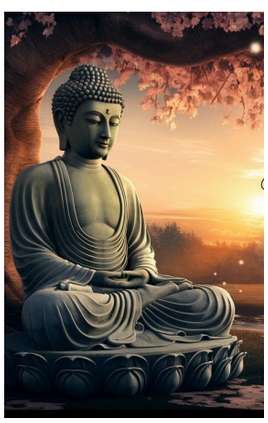

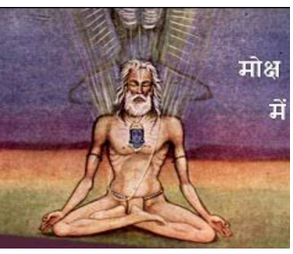

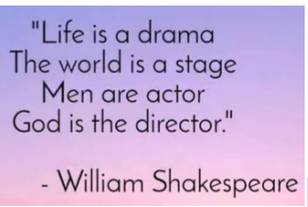

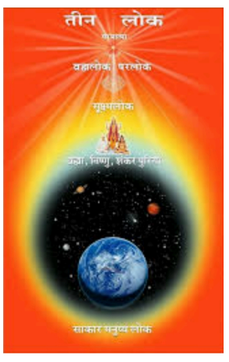

नहीं है। नाटक से निकल ही नहीं सकते। मोक्ष पा नहीं सकते। बना-बनाया (Ready made) ड्रामा है ना। कोई मनुष्य समझते हैं मोक्ष मिलता है, इसलिए पुरुषार्थ करते रहते हैं। जैसे जैनी लोग पुरुषार्थ करते रहते हैं, उनकी अपनी रस्म-रिवाज है, उनका अपना गुरू है, जिसको मानते हैं। बाकी मोक्ष किसको भी मिलता नहीं है। तुम तो जानते हो हम पार्टधारी हैं, इस ड्रामा में। हम कब आये, फिर कैसे जायेंगे, यह किसको भी पता नहीं है। जानवर तो नहीं जानेंगे ना। मनुष्य ही कहते हैं हम एक्टर्स पार्टधारी हैं। यह कर्मक्षेत्र है, जहाँ आत्मायें रहती हैं। उनको कर्मक्षेत्र नहीं कहा जाता। वह तो निराकारी दुनिया है। उसमें कोई खेलपाल नहीं है, एक्ट नहीं। निराकारी दुनिया से साकारी दुनिया में आते हैं पार्ट बजाने, जो फिर रिपीट होता रहता है। प्रलय कभी होती ही नहीं। शास्त्रों में दिखाते हैं - महाभारत लड़ाई में यादव और कौरव मर गये, बाकी 5 पाण्डव बचे, वह भी पहाड़ों पर गल मरे। बाकी कुछ रहा नहीं। इससे समझते हैं प्रलय हो गई। यह सब बातें बैठ बनाई हैं, फिर दिखाते हैं समुद्र में

पीपल के पत्ते पर एक बच्चा अंगूठा चूसता आया। अब इनसे फिर दुनिया कैसे पैदा होगी। मनुष्य जो कुछ सुनते हैं वह सत-सत करते रहते हैं। अभी तुम बच्चे जानते हो कि शास्त्रों में भी क्या-क्या लिख दिया है। यह सब हैं भक्ति मार्ग के शास्त्र। भक्तों को फल देने वाला एक भगवान बाप ही है। कोई मुक्ति में, कोई जीवनमुक्ति में चले जायेंगे। हर एक पार्टधारी आत्मा का जब पार्ट आयेगा तब फिर आयेगी। यह ड्रामा का राज़ सिवाए तुम बच्चों के और कोई नहीं जानते। कहते हैं हम रचता और रचना को नहीं जानते। ड्रामा के एक्टर्स होकर और ड्रामा के आदि-मध्य-अन्त, ड्युरेशन आदि को न जानें तो बेसमझ कहेंगे ना। समझाने से भी समझते नहीं। 84 लाख समझने कारण ड्युरेशन भी लाखों वर्ष दे देते हैं।

अभी तुम समझते हो बाबा हम आपसे कल्प-कल्प आकर स्वर्ग की बादशाही लेते हैं। 5 हज़ार वर्ष पहले भी आपसे मिले थे, बेहद का वर्सा लेने। यथा राजा-रानी तथा प्रजा सब विश्व के मालिक बनते

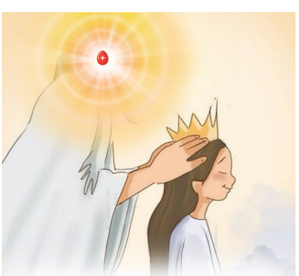

वाह रे मैं...!

हैं। प्रजा भी कहेगी हम विश्व के मालिक हैं। तुम जब विश्व के मालिक बनते हो, उस समय चन्द्रवंशी राज्य नहीं होता है। तुम बच्चे ड्रामा के सारे आदि-मध्य-अन्त को जानते हो। मनुष्य भक्ति मार्ग में जिसकी पूजा करते हैं उनको भी जानते नहीं। जिसकी भक्ति करनी होती है तो उनकी बायोग्राफी को भी जानना चाहिए। तुम बच्चे अभी सबकी बायोग्राफी जानते हो बाप के द्वारा। तुम बाप के बने हो। बाप की बायोग्राफी का पता है। वह बाप है पतित-पावन, लिबरेटर, गाइड। तुमको कहते हैं पाण्डव। तुम सबके गाइड बनते हो, अन्धों की लाठी बनते हो सबको रास्ता बताने के लिए। यथा बाप गाइड तथा तुम बच्चों को भी बनना है। सबको रास्ता बताना है। तुम आत्मा, वह परमात्मा है, उनसे बेहद का वर्सा मिलता है। भारत में बेहद का राज्य था, अब नहीं है। तुम बच्चे जानते हो हम बेहद के बाप से बेहद सुख का वर्सा लेते हैं अर्थात् मनुष्य से देवता बनते हैं। हम ही देवतायें थे फिर 84 जन्म लेकर शूद्र बने हैं। बाप आकर शूद्र से ब्राह्मण बनाते हैं। यज्ञ में ब्राह्मण जरूर चाहिए।

यह है ज्ञान यज्ञ, भारत में यज्ञ बहुत रचते हैं। इसमें खास आर्य समाजी बहुत यज्ञ करते हैं। अब यह तो है रूद्र ज्ञान यज्ञ, जिसमें सारी पुरानी दुनिया स्वाहा होनी है। अब बुद्धि से काम लेना पड़ता है। कलियुग में तो बहुत मनुष्य हैं, इतनी सारी पुरानी दुनिया खलास हो जायेगी। कोई भी चीज काम में नहीं आनी है। सतयुग में तो फिर सब कुछ नया होगा। यहाँ तो vs कितना गन्द है। मनुष्य कैसे गन्दे रहते हैं। धनवान बड़े अच्छे महलों में रहते हैं।

Please... समय रहते जाग जाओ

गरीब तो बिचारे गन्द में, झोपड़ियों में पड़े हैं। अब इन झोपड़ियों को डिस्ट्राय (Demolition) करते रहते हैं। उनको दूसरी जगह दे वह जमीन फिर बेचते रहते हैं। नहीं उठते तो जबरदस्ती उठाते हैं। गरीब दु:खी बहुत हैं, जो सुखी हैं वह भी स्थाई सुखी नहीं। अगर सुख होता तो क्यों कहते कि यह काग विष्टा समान सुख है।

शिव भगवानुवाच, हम इन माताओं के द्वारा स्वर्ग के द्वार खोल रहे हैं। माताओं पर कलष रखा है। वह फिर सबको ज्ञान अमृत पिलाती हैं। परन्तु

तुम्हारा है प्रवृत्ति मार्ग। तुम हो सच्चे-सच्चे ब्राह्मण, तो सबको ज्ञान चिता पर बिठाते हो। अभी तुम बनते हो दैवी सम्प्रदाय। v/s आसुरी सम्प्रदाय अर्थात् रावण राज्य। गांधी भी कहते थे राम राज्य हो। बुलाते हैं हे पतित-पावन आओ परन्तु अपने को पतित समझते थोड़ेही हैं। बाप बच्चों को सुजाग करते हैं, तुम घोर अन्धियारे से सोझरे में आये हो। मनुष्य तो समझते हैं गंगा स्नान करने से पावन बन जायेंगे। ऐसे ही गंगा में हरिद्वार का सारा किचड़ा पड़ता है। कहाँ फिर वह किचड़ा सारा खेती में ले जाते हैं। सतयुग में ऐसे काम होते नहीं। वहाँ तो अनाज ढेर के ढेर होता है। पैसा थोड़ेही खर्च करना पड़ता है। Brahma बाबा अनुभवी है ना। पहले कितना अनाज सस्ता था। सतयुग में बहुत थोड़े मनुष्य हैं हर चीज़ सस्ती रहती है। तो बाप कहते हैं - मीठे बच्चे, अभी तुमको पतित से पावन बनना है। युक्ति बहुत सहज बताते हैं, अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो। आत्मा में ही खाद पड़ने से मुलम्मे की बन गई है। जो पारसबुद्धि थे वही अब पत्थरबुद्धि बने हैं। तुम बच्चे अभी बाप के

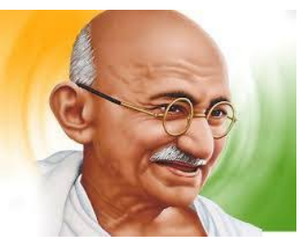

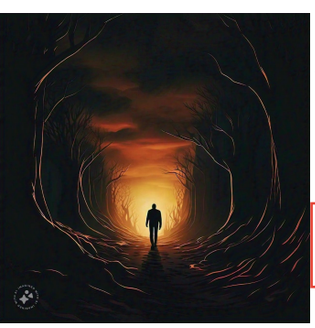

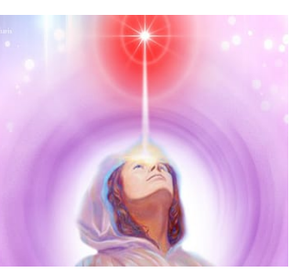

पास पत्थरनाथ से पारसनाथ बनने आये हो। बेहद का बाप तुमको विश्व का मालिक बनाते हैं, सो भी गोल्डन एजेड विश्व का। यह है आइरन एजेड विश्व। बाप बैठ बच्चों को पारसपुरी का मालिक बनाते हैं। तुम जानते हो यहाँ के इतने महल माड़ियाँ आदि कोई काम में नहीं आयेंगे। सब खत्म हो जायेंगे। यहाँ क्या रखा है! अमेरिका के पास कितना सोना है! यहाँ तो थोड़ा बहुत सोना जो माताओं के पास है, वह भी लेते रहते हैं क्योंकि उनको तो कर्ज में सोना देना है। तुम्हारे पास वहाँ सोना ही सोना होता है। यहाँ कौड़ियाँ, वहाँ हीरे होंगे। इनको कहा जाता है आइरन एज। भारत ही अविनाशी खण्ड है, कभी विनाश नहीं होता। भारत है सबसे ऊंच ते ऊंच। तुम मातायें सारे विश्व का उद्धार करती हो। तुम्हारे लिए जरूर नई दुनिया चाहिए। पुरानी दुनिया का विनाश चाहिए। कितनी समझने की बातें हैं। शरीर निर्वाह अर्थ धन्धा आदि भी करना है। छोड़ना कुछ भी नहीं है। बाबा कहते हैं सब कुछ करते हुए मुझे याद करते रहो। भक्ति मार्ग में भी तुम मुझ माशूक को याद करते आये हो

ये पक्का समझ लो

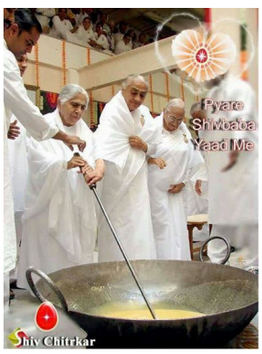

याद करो...

मुसाफ़िर हूँ मैं यारों
ना घर है ना ठिकाना
मुझे चलते जाना है, बस, चलते जाना
मुसाफ़िर...

एक राह रुक गई, तो और जुड़ गई
मैं मुड़ा तो साथ-साथ, राह मुड़ गई
हवा के परों पे, मेरा आशियाना
मुसाफ़िर...

दिन ने हाथ थाम के, इधर बिठा लिया
रात ने इशारे से, उधर बुला लिया
सुबह से शाम से मेरा, दोस्ताना
मुसाफ़िर...

कि हमको आकर सांवरे से गोरा बनाओ। उनको मुसाफिर कहा जाता है। तुम सब मुसाफिर हो ना। तुम्हारा घर वह है, जहाँ सब आत्मायें रहती हैं।

तुम सबको ज्ञान चिता पर बिठाते हो। सब हिसाब-किताब चुक्तू कर जाने वाले हैं। फिर नयेसिर तुम आयेंगे, जितना याद में रहेंगे उतना पवित्र बनेंगे और ऊंच पद पायेंगे। माताओं को तो फुर्सत रहती है। मेल्स की बुद्धि धन्धे आदि तरफ चक्र लगाती रहती है, इसलिए बाप ने कलष भी माताओं पर रखा है। यहाँ तो स्त्री को कहते हैं कि पति ही तुम्हारा ईश्वर गुरू सब कुछ है। तुम उनकी दासी हो। अभी फिर बाप तुम माताओं को कितना ऊंच बनाते हैं। तुम नारियाँ ही भारत का उद्धार करती हो। कोई-कोई बाबा से पूछते हैं - आवागमन से छूट सकते हैं? बाबा कहते हैं - हाँ, कुछ समय के लिए। तुम बच्चे तो आलराउन्ड आदि से अन्त तक पार्ट बजाते हो। दूसरे जो हैं वह मुक्तिधाम में रहते हैं। उनका पार्ट ही थोड़ा है। वह स्वर्ग में तो जाने वाले हैं नहीं। आवागमन से मोक्ष उसको कहेंगे जो

पिछाड़ी को आये और यह गये। ज्ञान आदि तो सुन न सकें। सुनते वही हैं जो शुरू से अन्त तक पार्ट बजाते हैं। कोई कहते हैं - हमको तो यही पसन्द है। हम वहाँ ही बैठे रहें। ऐसे थोड़ेही हो सकता है। ड्रामा में नूँधा हुआ है, जाकर पिछाड़ी में आयेंगे जरूर। बाकी सारा समय शान्तिधाम में रहते हैं। यह बेहद का ड्रामा है। अच्छा!

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमॉर्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

1) सच्चा-सच्चा ब्राह्मण बन सबको ज्ञान अमृत पिलाना है। ज्ञान चिता पर बिठाना है।

2) शरीर निर्वाह अर्थ धन्धा आदि सब कुछ करते पतित से पावन बनने के लिए बाप की याद में रहना है और सबको बाप की याद दिलाना है।

वरदान:- विशेषताओं के दान द्वारा महान बनने वाले महादानी भव

ज्ञान दान तो सब करते हैं लेकिन आप विशेष आत्माओं को अपनी विशेषताओं का दान करना है।

जो भी आपके सामने आये उसे आप से बाप के स्नेह का अनुभव हो, आपके चेहरे से बाप का चित्र और चलन से बाप के चरित्र दिखाई दें।

आपकी विशेषतायें देखकर वह विशेष आत्मा बनने की प्रेरणा प्राप्त करे, ऐसे महादानी बनो तो आदि से अन्त तक, पूज्य पन में भी और पुजारी पन में भी महान रहेंगे।

स्लोगन:- सदा आत्म अभिमानी रहने वाला ही सबसे बड़ा ज्ञानी है।

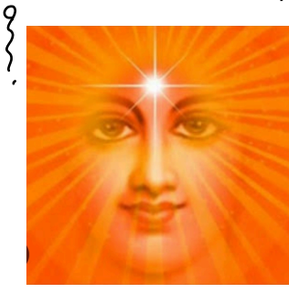

अव्यक्त इशारे -

सहजयोगी बनना है तो परमात्म प्यार के अनुभवी बनो

जो सदा बाप की याद में लवलीन रह मैं-पन की त्याग-वृत्ति में रहते हैं, उन्हों से ही बाप दिखाई देता है।

आप बच्चे नॉलेज के आधार से बाप की याद में समा जाते हो तो यह समाना ही लवलीन स्थिति है,

जब लव में लीन हो जाते हो अर्थात् लगन में मग्न हो जाते हो तब बाप के समान बन जाते हो।

फाइनल पेपर

पूछो अपने आप से...

49

प्रकृति के अधीन तो नहीं हो ना? प्रकृति का कोई भी तत्व हलचल में नहीं लावे। आगे चलकर तो बहुत पेपर आने हैं। किसी भी साधनों के आधार पर,

65

ये पक्का समझ लो

स्थिति का आधार न हो। मायाजीत के साथ-प्रकृतिजीत भी बनना है। प्रकृति की हलचल के बीच - यह क्या? यह क्यों हुआ? यह कैसे होगा? ज़रा भी संकल्प में टेंशन (Tension) हुआ अर्थात् अटेंशन (Attention) कम हुआ, तो फुल पास नहीं होंगे। इसलिए सदा अचल होना है।

17/6/25

(09.05.1977)

आज मुज आत्मा सजनी की मेरे प्यारे साजन से और उस प्राणप्यारे साजन की मुज सजनी से कुछ खट्टी कुछ मीठी अर्थात मजेदार रूह रीहान।

##########

song
Click

Manwa laage.. o manwa laage
Laage re sanware
Laage re sanware
Le tera hua jiya ka, jiya ka, jiya ka ye gaanv re

(मेरे प्यारे साजन,
मेरा मन जो की अब आप से ही लगा/जुड़ा रहता है जिससे की अब तो मेरे जिया का ये सारा गाँव आपका हुआ अर्थात ये दिल अब आपका और सिर्फ आपका हुआ।)

Manwa laage.. o manwa laage
Laage re sanware
Laage re sanware

Le khela maine jiya ka, jiya ka, jiya ka hai daav re
(और साथ ही साथ आपको पाने के लिए मैंने दिल/जान की बाज़ी लगा दी हैं।)

Musaafir hoon main door ka
Deewana hoon main dhoop ka
Mujhe na bhaye.. na bhaye, na bhaye chaanv re
(ओ मेरी प्यारी सजनी,
मैं हसीन मुसाफिर बहुत दूर, परमधाम से आया हुआ हूँ।
और मैं तो धुप/पवित्रता का ही दीवाना हूँ,
मुझे रिंचक मात्र भी छाँव/अपवित्रता भाति/पसंद नहीं हैं।)

Manwa laage.. o manwa laage
Laage re sanware
Laage re sanware
Le tera hua jiya ka, jiya ka, jiya ka ye gaanv re

#####======$$$$$
【मैं आत्मा सजनी】
Aisi kaisi boli tere naino ne boli
Jaane kyon main doli
Aisa lage teri ho li main, tu mera..

(मेरे नयनो के नूर मेरे प्यारे साजन,
तुम्हारे नयनों ने ऐसी तो कैसी बोली बोली, जिससे की मुझे पता भी न रहा अर्थात सुधबुध भूल कर तुम्हारे प्यार में डोलने लगी अर्थात मगन/पागल हो गई।
और ऐसा लगा जैसे की मैं तो तुम्हारी हुई,
और तुम सिर्फ और सिर्फ मेरे.....)

(शिव साजन:)
mm.. Tune baat kholi kacche dhaago me piro li
Baaton ki rangoli se na khelun aise holi main
naa tera..
(ओ मेरी भोली सजनी 【भोली अर्थात जो माया के सभी रूपों को जानती नहीं की माया भी सर्वशक्तिमान हैं और एक पल की भी गफलत तुजे मेरा होने नहीं देंगी अर्थात दूर कर देंगी】,

तूने बाते तो बहुत ही अच्छी अच्छी और मीठी मीठी बोल के बातो की बहुत बड़ी और बापदादा को आकर्षित करने वाली माला ही बना ली।

परंतु सिर्फ ऐसी प्यारी प्यारी बातो की रंगोली से मैं तुम्हारे साथ होली नहीं खेलूंगा अर्थात मुझे तुमने जो भी बातों रूपी वायदे किये हैं उसे practical कर के दिखाओ।

तो जब तक तुम practical proof नहीं देती तब तक मैं तुम्हारा नहीं बन सकता।)

【मैं आत्मा सजनी】
O.. kisi ka toh hoga hi tu
Kyun na tujhe main hi jeetun
(ओ मेरे प्यारे दिलतख्तनशीं साजन,
ये बात तो आपको माननी ही पड़ेंगी की किसी न किसी के आप साजन तो बनेंगे ही।
तो आपको क्यों न मैं ही जीतूं?

फिर चाहे उसके लिए कोई भी कीमत क्यों न चुक्तू करनी पड़े।

मेरे प्यारे साजन,
Please Underline the word कोई भी।)

【शिव साजन मंद मंद मुस्कुराते हुए बोले की..】
Khule khabon me jeete hain, jeete hain baawre
(मैं सारी श्रुष्टी का मालिक हूँ और मुझे पाने के लिए तुम जैसी कई सारी आत्माओ रूपी बाँवरी/पागल सजनिया ऐसे ही ख्वाबों में जीती हैं।

उसे ये मालुम नहीं की मुझे पाने के लिए कितनी कठिनायों का सामना करना पड़ेंगा, कितनी दृढ़ता रखनी होंगी।)

【मैं आत्मा सजनी】
Mann ke dhaage, o mann ke dhaage
Dhaage pe saanwre
Dhaage pe saanwre
Hai likha mene tera hi, tera hi, tera hi to naam re
(ओ मेरे मन के मीत,
चाहे आप मानो या न मानो परंतु मैंने जब से ब्राह्मण जन्म लिया हैं तबसे आपको पाने का ही लक्ष्य रखा हैं अर्थात मैंने मेरे मन के धागों पर सिर्फ और सिर्फ आपका ही नाम लिखा हैं।

और आप देखते जाइए - जो भी बातें मैंने कही हैं आपसे, उसको चाहे कितने ही कष्ट सहन कर के या फिर मर कर भी पूरा करेंगे।)

#####$$$$$$#####

【मैं आत्मा सजनी अपने मन ही मन】
Ras bundiya nayan piya raas rache
(मेरे नयनो की रस बून्द अर्थात मेरे नयनो के नूर मेरे साजन,
आप जब दादी गुलज़ार के तन में आते हो और stage पर खड़ी सभी आत्मा रूपी गोपिओ के साथ रास रचते हो और मिलते हो - जैसी दादी जानकीजी से मिलते हो।)

Dil dhad dhad dhadke shor mache
(तो दूर बैठी मुज आत्मा के इस दिल में अपरम अपार गति से धड़कने शोर मचाती हैं और मैं पागल बन सोचती हूँ की मैं कब दादी जी के मुआफिक ही साकार में तुमसे मिलूंगी?)

Yun dekh sek sa lag jaaye
Main jal jaaun bas pyaar bache
(और दादी को आपसे ऐसे मिलते हुए देख,

आप शमा का मुज परवाने पर शेक सा लगता हैं और उस ही शेक के कारन मैं इस देह अभिमान और सर्व विकारो सहित आप शमा पर एक पल की भी सोच बिना फ़िदा हो जाती हूँ , जिससे की बस आप और मैं अर्थात हमारा प्यार शेष रह जाता हैं।)

####$$$$%%%%

【आखिर भी वह दिन अब आया की आया, जब मेरे प्यारे साजन आप मुझसे कहेंगे की..】

Aise dore daale kaala jaadu naina kaale
Tere main hawaale hua seene se laga le
Aa.. main tera...
(मेरी सिकिलधि सजनी,
तुम्हारी ध्रुव के मुआफिक लगन के कारन, और अर्जुन के मुआफिक तुम्हारी नज़रे जो सदा ही मुज पर टीकी रहती हैं अर्थात तुम्हारा मुझे पाने का ही एक मात्र जो लक्ष्य हैं और जब की अब आखिर वो लक्ष्य अर्थात मुझे पा ही लिया हैं तो ...

मैं भी अब तुम्हारे हवाले हुआ हूँ - तो आ जाओं मेरी बाहों में और मुझे अपने सीने से लगा लो अर्थात बाहों में ले लो।

तो अब मैं आख़िरकार सिर्फ और सिर्फ तुम्हारा हुआ।)

O.. dono dheeme dheeme jalein
Aaja dono aise milein
Zameen pe laage, na tere, na mere paanv re
(सारे कल्प के हिसाब से जो अब थोडा सा संगम का समय बचा हुआ हैं उसमे हम सच्चे प्यार की अगन में एक दूसरे में समा कर ऐसे धीमे धीमे जले की जिससे तुम्हारी 5000 वर्षो की प्यास बुज जाएँ।

और ऐसे combined रहे की उस स्थूल वतन या देहभान रूपी जमीं पे एक पल के लिए भी तुम्हारे पाँव न लगे और मैं तो हूँ ही परमधाम निवासी।)

Manva laage.. manva laage
Laage re sanware
Laage re sanware
Le tera hua jiya ka, jiya ka, jiya ka ye gaanv re

【मैं आत्मा सजनी】
Rahoon main tere naino ki, naino ki,
naino ki hi chaanv re...
(मेरे प्यारे साजन,
बस अब तो मुझे रहना ही हैं तुम्हारे नैनो की ही छाँव में।)

Le tera hua jiya ka, jiya ka, jiya ka ye gaanv re
Rahoon main tere naino ki, naino ki,
naino ki hi chaanv re...